शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजनीतिक चेतना सम्पन्न साहित्यकार प्रेमचन्द

डॉ. शीला श्रीवास्तव
(सहायक प्राध्यापक हिंदी)
श्री भगवान महावीर पी. जी. कालेज
पावानगर, (फाजिलनगर), कुशीनगर, भारत

शोध संक्षेप

प्रेमचन्द का साहित्य उनके युग का प्रतिबिम्ब है। उनकी लेखनी से जीवन का कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह सका है। वे जीवन को उसकी समग्रता में देखते हैं। उनके साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ। उनके लेखन के विषय और पात्र इतने स्वाभाविक हैं कि उनमें पूरा युग साकार हो उठता है। साहित्य और राजनीति को बिलगाया नहीं जा सकता है। उन्होंने किसी वाद से प्रेरित होकर नहीं लिखा है, बल्कि मनुष्यता की रक्षा के लिए जो भी आवश्यक है, उसका चित्रण अपने साहित्य में किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रेमचंद की राजनीतिक चेतना पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

किसी भी कथाकार का जीवन और उसका परिवेश ही पात्रों की चरित्र सृष्टि करता है- यह बात प्रेमचन्द के सन्दर्भ में पूर्णतया सत्य चरितार्थ होती है। प्रेमचन्द ने जिस प्रकार अपना जीवन व्यतीत किया, जिस प्रकार के लोगों के सम्पर्क में रहे तथा जिस समाज में वे रहे उन सबका सीधा प्रभाव उनके कथा सहित्य में दिखाई पड़ता है।

प्रेमचन्द का साहित्य उनके युग का प्रतिबिम्ब है। वे जिस युग में लिख रहे थे उसकी पूरी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया का सर्जनात्मक आकलन उन्होंने प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाधर्मिता समकालीन राजनीति और सामाजिक गतिविधियों से संचालित है। उन्होंने तत्कालीन समाज की व्याख्या इसी दुहरे रूप में प्रस्तुत की है। प्रेमचन्द का युग संघर्षों का युग था। देश उस समय अंग्रेजों के चंगुल में फँसा चुनौतियों का सामना कर रहा था। भारत माता को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए तमाम राजनीतिक आन्दोलन चल रहे थे। प्रेमचन्द इन आन्दोलनों से प्रभावित थे।

प्रेमचन साहित्य में राजनीतिक चेतना

राजनीतिक चेतना सम्पन्न प्रेमचन्द युग की प्रमुख समस्या 'स्वाधीनता प्राप्ति' की थी। पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति के लिए कटिबद्ध गाँधी जी ने सत्याग्रह द्वारा स्वातन्त्र्य आन्दोलन का सूत्रपात कर भारतीय राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया। इस राजनीतिक उथल-पुथल ने प्रेमचन्द को भी प्रभावित किया। "उन्होंने सक्रिय राजनीति में कभी कोई हिस्सा नहीं लिया, लेकिन स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनका योगदान किसी राजनेता से कम नहीं है। प्रेमचन्द के तो लेखन की शुरूआत ही इस से हुई थी। ... अपने समय की राजनीतिक घटनाओं पर प्रेमचन्द की जागरूक निगाह बराबर लगी रहती थी। 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों तथा 'समरयात्रा', 'जुलूस', 'सत्याग्रह', 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कहानियों में प्रेमचन्द की राजनीतिक चेतना विशेष रूप से मुखरित हुई है।'1

प्रेमचन्द युगीन भारत प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में अंग्रेजों के अधीन था। देश के नेताओं की लम्बे समय से कोशिश थी कि योग्य एवं शिक्षित भारतीय उच्च सरकारी पदों पर प्रतिष्ठित हों। उन्हें इस कार्य में सफलता भी हासिल हुई किन्तु परिणाम अधिक सुखदायक नहीं निकले। भारतीय उच्च अधिकारी बनकर भी अंग्रेजों के गुलाम थे, अतः अपने विचार स्वातन्त्र्य एवं आत्म गौराव को सुरक्षित नहीं रख सके। सरकार की प्रजाविरोधी नीतियों के कारण उन्हें अपने ही भाइयों पर जुर्म करना पड़ता था। फलस्वरूप जन आक्रोश एवं आत्मग्लानि दोनों से ही बचना कठिन था। जनता के पक्ष में रिपोर्ट देने पर इन अधिकारियों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता था। फलतः इस काल में बहुत से लोगों ने सरकारी नौकरियों से इस्तीफा दे दिया। 'वरदान' में मुंशी संजीवन लाल एवं राधाचरण, 'कर्मभूमि' में सलीम, 'प्रेमाश्रम' में डिप्टी ज्वाला सिंह, 'पत्नी से पति' 'जुलूस' आदि कहानियों के सरकारी अफसर अपनी नौकरियों से इस्तीफा देकर स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेते हैं।

प्रेमचन्द युग में स्वाधीनता संघर्ष के साथ अछूतोद्धार, करबन्दी एवं स्वदेशी आन्दोलन व देशव्यापी हड़तालें सक्रिय थीं, जिनको सफल बनाने के लिए गाँधी जी की भाँति प्रेमचन्द भी सत्य, न्याय एवं अहिंसा-साधनों में विश्वास करते थे। सरकार के लिए अपने शक्तिबल से हिंसक आन्दोलनों को दबाना अत्यन्त सरल कार्य था किन्तु वह अहिंसक सत्याग्रहियों के दृढ़ संकल्प, नैतिक साहस और आत्मबल से भय खाती थी। मिस्टर क्लार्क सोफी से कहते हैं- "हम क्रान्ति से षड़यन्त्रों से संग्राम से इतना नहीं डरते, जितना इस भाँति के धैर्य और धुन से ... एक सेना का मुकाबला करना इतना कठिन नहीं, जितना ऐसे गिने-गिनाये व्रतधारियों का, जिन्हें संसार में कोई भय नहीं है।"2

इस काल के राजनीतिक आन्दोलनों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही। गाँधी जी ने भी महिलाओं से आगे आने का आग्रह किया था, जिसका प्रभाव प्रेमचन्द के व्यक्तिगत जीवन पर भी पड़ा। जैनेन्द्र के पास पत्र में उन्होंने लिखा "मेरी पत्नी जी पिकेटिंग के जुर्म में दो महीने की सजा पा गई" मैं जाने का इरादा ही कर रहा था पर उन्होंने खुद जाकर मेरा रास्ता बन्द कर दिया।3 'कर्मभूमि' में सुखदा, नैना, रेणुका देवी, 'रंगभूमि' में सोफिया, कहानी 'जेल' में मृदुला क्षमा, 'पत्नी से पति' में गोदावरी, 'शराब की दुकान' की मिसेज सक्सेना 'जुलूस' की मिट्ठन बाई, 'समर यात्रा' की नोहरी- ऐसी ही पात्र हैं जिन्होंने स्वराज्य आन्दोलन में भाग ही नहीं लिया अपितु आन्दोलनों का नेतृत्व भी किया।

प्रेमचन्द ने हमेशा राजनीतिक लड़ाई को आम आदमी से जोड़कर देखा। उन्होंने यह बात अच्छी तरह पहचान ली थी कि जो लड़ाई आम आदमी से कटी हुई हो वह सही मायने में बड़े लोगों की लडाई है, देश की लड़ाई नहीं है। उनकी दृष्टि में स्वराज्य आन्दोलन गरीबों का आन्दोलन है। "गरीबों की छाती पर दुनिया ठहरी हुई है यह कठोर सत्य है। हरेक आन्दोलन में गरीब लोग ही आगे बढ़ते हैं, यह भी अमर सत्य है।"4

विभिन्न उपन्यासों एवं कहानियों में सामन्ती चरित्र को उभारकर प्रेमचन्द ने यह दिखाया है कि देश के रंगमंच पर इस तरह के बड़े घरानों के नेता जो आ धमके हैं, वे मूलतः जन जीवन से नहीं जुड़े हैं और सच्चा स्वराज्य इनके माध्यम से नहीं मिल सकता। इनका त्याग भीतर

का नहीं होता, बनावटी होता है। इनका विद्रोह भी उसी सीमा तक होता है जिस सीमा तक इनकी सुविधाएँ खतरे में न पड़ें। ये वास्तव में लड़ाई में सहायक न होकर बाधक होते हैं।"5

प्रेमचन्द के समक्ष राजनीतिक आन्दोलन का सबसे निर्बल रूप कौंसिल थे जिनमें यद्यपि प्रजा के प्रतिनिधि ही चुनकर जाते थे किन्तु वे अंग्रेजी शासन के विरूद्ध कुछ भी करने में असमर्थ थे। 'सेवासदन' में डाक्टर श्यामाचरण, 'प्रेमाश्रम' के राय कमलानन्द, 'रंगभूमि' के गांगुली आदि ऐसे निरीह कौंसिलर के वास्तविक सामर्थ्य को मेहता इन शब्दों में प्रकट करते हैं- "आधे नहीं, अगर कौंसिल के सारे मेम्बर हिन्दुस्तानी हों तो भी वे नयी नीति का उद्घाटन नहीं कर सकते। वे कैसे भूल जायें कि कौंसिल में उनकी उपस्थिति केवल सरकार की कृपा और विश्वास पर निर्भर है ... इस अवस्था में यही सर्वोचित है कि शब्दाडम्बर से काम लेकर अपनी रक्षा की जाय।"6 उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' में प्रेमचन्द ने खून की उस आखिरी बूँद को जो देश की आजादी के लिए गिरती है, दुनिया का सबसे अनमोल रतन माना है।"7

प्रेमचन्द काल में राष्ट्रीय भावपक्ष का मूल स्रोत कांग्रेस और गाँधीवाद था। राष्ट्रीय भाव के इसी केन्द्र बिन्दु पर 'सुहाग की साड़ी', 'सत्याग्रह', 'तावान', 'विचित्र होली', 'अनुभव', 'होली का उपहार', आदि कहानियाँ लिखी गयी हैं। स्वातन्त्र्य संग्राम काल में जबकि प्रत्येक व्यक्ति बिना तर्क दिये यह स्वीकार कर लेता था कि इस देश की प्रत्येक बीमारी का एकमात्र कारण इसकी परतंत्रता है। आजादी मिलते ही यहाँ रामराज्य स्थापित हो जायेगा। उस समय भी प्रेमचन्द यह समझ रहे थे कि केवल स्वतंत्रता से ही यह बीमारी दूर नहीं होगी। 'आहूति कहानी में रूपमती के माध्यम से प्रेमचन्द कहते हैं- "अगर स्वराज्य आने पर भी सम्पत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा-लिखा समाज यों ही स्वार्थान्ध बना रहे, तो मैं कहूँगी ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेजी महाजनों की धसन लोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। उन्हीं बुराईयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ाएगी कि वे विदेशी नहीं स्वदेशी हैं।"8 'सोजेवतन' में संकलित पाँचों कहानियाँ - 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन', 'शेख मखमूर', 'यह मेरा वतन है', 'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम', तथा 'शोक का पुरस्कार' ऐतिहासिक शासक वर्ग की वीरता, शौर्य पराक्रम एवं नैतिक मर्यादा का स्मरण कराती है। 'आदर्श विरोध', 'लाग-डाग', 'चकमा', 'मैकू', 'समरयात्रा', 'क्षमा, 'विश्वास', 'इस्तीफा' आदि प्रेमचन्द की राजनैतिक चेतना से प्रभावित कहानियाँ हैं। 'समरयात्रा तथा अन्य कहानियाँ' में राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न रूपों- शराब बन्दी, अंग्रेजी कपड़ों की होली जलाना, बड़े-बड़े जुलूसों के चित्र खींचे गये हैं। निश्चय ही प्रेमचन्द ने अपने साहित्य के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि वे एक राजनीतिक चेतना सम्पन्न साहित्यकार हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गद्य के प्रतिमान. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ16
2. रंगभूमि, प्रेमचन्द, पृष्ठ 307
3. चिट्ठी पत्री (2) पृष्ठ 10, संकलन-अमृतराय
4. स्वराज्य से किसका अहित होगा, लेख- हंस अप्रैल 1930
5. हिन्दी उपन्यास-एक अन्तर्यात्रा, डॉ. रादरश मिश्र, पृष्ठ 44
6. आदर्श विरोध- मनसरोवर, पृष्ठ214
7. गद्य के प्रतिमान, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ.10
8. कफन और अन्य कहानियाँ (संग्रह) पृ, 87